International Indexed, Peer Reviewed & Refereed Research Journal Related to Higher Education For all Subject

DEC., 2021

Vol-1, ISSUE-12

IMPACT FACTOR 5.901 (SJIF)

SHODH, SAMIKSHA AUR MULYANKAN

ISSN 0974-2832 (Print), E-ISSN- 2320-5474,RNI RAJBIL 2009/29954

Editor in Chief

Dr. Krishan Bir Singh

www.ugcjournal.com

Scanned with OKEN Scanner

International Level Double Blind Peer Reviewed, Referred, Indexed Research Journal, ISSN(Print) 0974-2832, E-ISSN-2320-5474,RNI-RAJBIL-2009/29954, Impact Factor 5.901(SJIF), DECEMBER -2021,Vol-I, Issue-12

Research Paper -Hindi

'कुत्ते' नाटक में स्त्री–पुरुष संबंध

* डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे ** डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे

*कला वाणिज्य महाविद्यालय, पुसेगांव, ता. खटाव, जि. सातारा
**असि. प्रो. दादा पाटील महाविद्यालय, कर्जत, जि. अहमदनगर

प्रस्तावना :–

स्त्री–पुरुष के मध्य एक प्राकृतिक आकर्षण है जो इन दोनों को एक–दूसरे की ओर आकृष्ट करता है। एक अदृश्य शक्ति इन दानों को बरबस एक–दूसरे की ओर खींचती रहती है। यदि यह आकर्षण समाप्त हो जाये तो संभवतः जीवन नीरस तथा आकर्षणहीन हो जाये। समय के अनुसार स्त्री–पुरुषों के संबंधों का आधार भी परिवर्तित होता रहा है। जहाँ वैदिक युग में स्त्री स्वतंत्रापूर्वक इच्छित पुरुष का वरण कर सकती थी, वहाँ मध्य युग में स्त्री–पुरुष की तृप्ति एवं भोग की वस्तू बन गयी। इस काल में स्त्री–पुरुष के लिए दोहरे मानदंड थे– पुरुष के लिए जो मानदंड थे वे स्त्रियों के मानदंडों से भिन्न थे। स्वतंत्रता के पश्चात स्त्री–पुरुष संबंधों में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं। पश्चिमी–सभ्यता के संपर्क ने उन्मुक्तता एवं व्यभिचारी वृत्ति को परिपोषित किया है, फलतः प्राचीन मान्यताओं को झटका लगा है।

स्त्री–पुरुष का एक–दूसरे के प्रति आकर्षण मनोवैज्ञानिक है। इन चुंबकीय संबंधों का कारण शारीरिक सौंदर्य, मनोहारी व्यवहार एवं प्यार भरी बातें हैं। स्त्री–पुरुष संबंधों में प्रेम एक प्रमुख कारण है। सभ्यता के प्रारंभ में, स्त्री–पुरुष संबंधों का आधार काम–भावना ही थी और यह भावना सन्तानोत्पत्ति एवं आनंद–प्राप्ति के प्रयोजन सिद्ध करती थी, परंतु आधुनिक युग में बदलते जीवन–मूल्यों के साथ–साथ यौन संबंधों का आधार भी बदल गया है।

डॉ.लक्ष्मीराय के शब्दों में 'विवाह की सीमा के बाहर योन–तृप्ति या विवाह से पूर्व यौन–संबंध अब पहले की भाँति चौंकाते नहीं है। फलतः स्वैरिता, परस्त्रीगमन, उन्मुक्त प्रेम तथा प्रयोगात्मक विवाह जैसी अनेक संकल्पनाएँ जन्म ले रही है। इन अभिवृत्तियों के मूल में आज की परिवर्तनशील परिस्थितियों और यौन–संबंधों तथा विवाह के संदर्भ में बदलते जीवन मूल्यों को लक्षित किया जा सकता है संभवतः ये बदलते जीवन–मूल्य आज सर्वाधिक महत्त्व रखते हैं।'[1]

डॉ.सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का जन्म 8 फरवरी 1936 को राजापुर गढेवा (उन्नाव, उ.प्र.) में हुआ। 1961 से मध्यप्रदेश, भोपाल में स्थायी निवास में रहने लगे। आपने एम.ए. (हिंदी) पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। जुलै 1961 से मार्च 1996 तक स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं में हिंदी विषय का अध्यापन किया। साथ ही गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में संचालित एम.फिल (हिंदी) कक्षाओं में 7 वर्ष तक अध्यापन किया। 31 मार्च 1996 को सी.एम.डी. महाविद्यालय के हिंदी विभाग में बिलासपुर से सेवानिवृत्त हो गए। अब स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं। बीस छात्र छात्राओं ने उनके निर्देशन में शोधकार्य कर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त लगभग साठ लघुशोध प्रबंधों का निर्देशन किया। उन्होंने आकाश झुक गया (1977), बदलते रुप (1978 तीन पुर्णाकार नाटक लिखे हैं), कुत्ते नाटक की रचना 1979 में की है, तथा भस्मासुर अभी जिंदा है (1980) की रचना की है। इसके साथ ही साथ इन्होंने कई ऐतिहासिक नाटकों की रचना की है। प्रस्तुत नाटक 'कुत्ते' पर चर्चा करना इस आलेख का प्रमुख प्रयोजन है।

'कुत्ते– नाटक की कथावस्तु :–

प्रस्तुत नाटक में निम्न मध्य–वर्गीय नौकरी–पेशा नारी की वर्तमान स्थिति का चित्रण किया गया है। मिस आभा नाटक का केंद्रीय चरित्र है। वह निम्न मध्य परिवार की पढी–लिखी नौकरी–पेशा लडकियों के वर्ग की एक जीवंत प्रतिनिधिक चरित्र है। तीन छोटे भाई रिटायर्ड पिता और माता का भार उसे वहन करना पड रहा था, क्यों कि वह सबसे बडी थी। नौकरी के शुरुआती दौर में उसे ढेरों परेशानियां झेलनी

पडती है, उसे इस्तीफा भी देना पडता है। परंतु वह घबराती नही, शीघ्र ही परिस्थितियों से समझौता कर लेती है, तथा अपनी सहेली राका को सलाह देती है –

"सभी से मुस्कुराकर बात करो। आपस में सब जल–जलकर मरते रहेंगे। एक दूसरे पर तीखे व्यंग्य भी करेंगे।"

"आखिर तो एक दिन इन बडे कुत्तों की शामत आयेगी— तुम थोडा प्रेक्टिकल बनो राका। अब संवेदना में जीने का समय नही रहा।" ऊपरी तौर से खुश दिखने वाली आभा संघर्ष करते–करते अंदर से बुरी तरह टूट चुकी है। कपूर और बोरकर जैसे अधिकारियों के काले कारनामों को जानने के बावजूद उन्हें इज्जत का व्यवहार देना आभा की मजबूरी है। नौकरी पेशा लडकी आभा की यह त्रासदी उसे दर्शकों की अतिषय सहानुभूति प्रदान करती है। राका, आभा के वैयक्तिक चित्रण से अलग नही, वह अभी उस स्थिति में नही पहूंची है जहाँ तक आभा पहुँच चुकी है।

कपूर और बोरकर अधिकारियों और कर्मचारियों के ऐसे वर्ग–चरित्र को उभारते है जो ढलती उम्र में अपनी शारीरिक लालसा और कामुक प्रवृत्ति के शिकार है। नाटककार ने इन्हें 'सामाजिक कुत्ते' के नाम से संबोधित किया है। बजाज के माध्यम से निरर्थकता की जिंदगी जी रहे रिटायर्ड व्यक्तियों का वैयक्तिक चिंतन दर्शकों के मनस्तल की गहराइयों को स्पर्श करता है। आभा तथा राका के वैयक्तिक चिंतन का मनोवैज्ञानिक पक्ष भी बहुत मार्मिक समसामयिक तथा प्रभावोत्पादक है।

'कुत्ते' नाटक में स्त्री–पुरुष संबंध :–

डॉ.चंद्र ने अपने इस पशु–प्रतीक नाटक में अधिकारी एवं अधीनस्था के यौन–संबंधों का यथार्थ बोध के धरातल पर, चित्रण किया है। मध्यवर्गीय परिवार की आभा अपने पिता बजाज के रिटायर होने पर भिन्न–भिन्न कार्यालयों में नौकरी करने को विवश है, क्योंकि परिवार का सारा उत्तरदायित्व अब उसी पर है। आभा की सहेली राका, जो उम्र एवं अनुभव में उससे कम है, आर्थिक दबाव के कारण नौकरी करती है, परंतु यह देखकर कि कार्यालय में नौकरी करते समय वह अपने कौमार्य की रक्षा नहीं कर सकती, नौकरी छोड देती है।

आभा बहुत ही होशियारी से नौकरी करती है, जबकि उसके आफिस के दो पुरुष कुत्ते की तरह अपनी कामतुष्टि के लिए उसके पीछे पडे हैं।

समीक्ष्य नाटक पढने के बाद नाटककार के इस कथन से असहमत नहीं हुआ जा सकता कि 'कोरे मनोरंजन के लिए नाटक लिखना, दर्शकों को कुहासे में रखना है। नाटक से मनोरंजन हो, पर मनोरंजन के साथ ही दर्शक को समझने को भी मिलेकृ केवल हाथ झाडकर ही वह न चल दे। डॉ.चंद्र का 'मूल थीम में नारी व्यक्तित्व का विघटन दिखाने का लक्ष्य था, पर नाटक के रूप में आते–आते पुरुष–व्यक्तित्व विघटित हो गया।' इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए नरनारायण राय लिखते है : डॉ. चंद्र के इस नाटक में पुरूषों की लम्पटता के बीच जीने वाली उन स्त्रियों की वेदना का चित्रण है जो अपने को चारो ओर नोचने खसोटने और काट खाने वाले कुत्तों के बीच घिरी पाती हैं। पुरुष महानगरीय जीवन में आर्थिक दबाव के कारण नौकरी करने वाली स्त्रियों की मजबूरी का किस प्रकार फायदा उठाते है, सामाजिक इस तथ्य का नग्न रूप इस नाटक में दिखाई देता है।

विवेच्य नाटक में, सटीक प्रतीक के माध्यम से, अधिकारियों एवं कार्यालय में कार्य करने वाले अन्य पुरुष कर्मचारियों को सहकर्मी युवतियों के लिए कुत्तों की तरह लार टपकाते दर्शाया गया है। कपूर साहब, जिनकी आयु लगभग 50 वर्ष है, अपने आफिस में कार्य करने वाली आभा के घर के चक्कर यौन–तुष्टि के लिए लगाते हैं। इसी तरह बोरकर (बडे बाबू) भी, जिनकी आयु 45 वर्ष के ऊपर है और 6 बच्चों के पिता हैं, रतिज–संबंधों के लिए आभा के घर के चक्कर काटते हैं। आभा बडी चालाकी से दोनों को उलझाए रखती है और उनसे एक–दूसरे की शिकायत कर ऐसा नाटक रचती है कि कपूर और बोरकर यह अनुभव करते हैं कि आभा उनकी तरफ आकर्षित है।

आलोच्य नाटक में उन युवतियों की दयनीय अवस्था का भी चित्रण है, जो घर वालों का पेट भरने के लिए नौकरी तो करती हैं, परंतु चड्ढा जैसे साहबों के आगे स्वयं को समर्पित नहीं करती। वे यह तो जानती हैं कि आज उन्हीं का मार्केट गर्म है जो अपने को 'चीप' बनाकर अपने अधिकारियों को समर्पित हो जाती हैं। ऐसी युवतियाँ बिलकुल जुती की तरह होती हैं जो दूसरे के पैरों में फिट होकर नष्ट–भ्रष्ट हो जाती हैं। ऐसी युवतियाँ मजबूरी के कारण ही यह सब सहन करती है। 'पर इसमें भी चालाक लडकियाँ ही सफल होती हैं। मूर्ख तो आम की गुठली की तरह चूस कर फेंक दी जाती हैं।[2]

आजकल के कार्यालयों की स्थिति को देखकर इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता। राका इसीलिए नौकरी छोडकर अपने घर बैठ जाती है। ऐसी युवतियों के लिए उनका सौंदर्य दुश्मन है।

डॉ.'चंद्र' कुत्ते की प्रतीकात्मकता को अत्यंत सहजता से प्रकट करते हैं। कपूर साहब की कार जब आती है तो कुत्ते के भौंकने की आवाज प्रेक्षक को संकेत देती है कि कुत्ते जैसी प्रकृति वाला कपूर आया है। इसी तरह जब बोरकर का स्कूटर आता है, तब भी कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनाई पडती है। कपूर साहब और बोरकर जब आभा के घर होते हैं तो बीच–बीच में नाटककार कुत्ते भौंकने की ध्वनि सुनाकर उनके व्यक्तित्व की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति करता है। ऐसे कुत्तों के कारण आजकल की युवतियों को राह चलते कितनी कठिनाइयों का

Scanned with OKEN Scanner

सामना करना पडता है, यह किसी से छिपा नहीं है। ये कुत्ते बडे भयंकर होते हैं और इनके बच्चे तो उनसे भी भयंकर होते हैं, क्योंकि उनका विष तो इंजेक्शनों से भी दूर नहीं होता। इस संदर्भ में आभा और राका का यह वार्तालाप द्रष्टव्य है :

राका : इन कुत्तों के कारण तो आजकल चलना मुश्किल हो गया है।
मैं तो अभी बच गयी, नहीं तो काट ही लिया था।

आभा : इनसे बहुत सतर्क होकर चलना पडता है, जरा–सा चूके कि बस— ![3]

कुछ स्थलों पर इन कुत्तों को आकर्षित करने में उन युवतियों का भी हाथ होता है जो तडक–भडक के साथ सडक पर चलती हैं। जब मकान के दरवाजे और खिडकियाँ खुली छोड देंगे तो चोर के घर में घुसने की संभावना बढ जाएगी।

दर्शक–पाठक इस बात से भली–भाँति परिचित हैं कि आभा इन कुत्तों को किस प्रकार अपने वश में रखती है। वह राका को बताती है :

'इन कुत्तों को यदि बहुत पुचकारेगी तो मुँह चाटेंगे और यदि जादा दुतकारेगी, तो नुकसान पहुँचाएँगे। इन्हें तो वस 'तू' और 'धत' में बहलाए रहें। भूखे कुत्ते हैं, इन्हें रोटी से जादा माँस प्रिय है, माँस का टुकडा दूर से दिखाएँ, बस पूँछ हिलाते रहेंगे।'[4]

माँस का टुकडा वास्तविक माँस न होकर युवतियों के अंग–प्रत्यंग का ही संकेतक है। इस युक्ति से खूँखार से खूँखार कुत्ते भी दुम हिलाने लगते हैं।

नाटके के अंत में आभा का यह कथन नाटक की प्रतीकात्मकता को स्पष्ट करता है :

'ये साले कुत्ते कितने विषयी हैं। विषय के लिए आपस में लडते और काटते हैं। एक ही के पीछे कई लगे हैं'।[5]

सामाजिक को ज्ञात है कि इस कथन से पूर्व ही बोरकर आभा के घर से उठकर गया था और कथन के अंत में कपूर आ जाता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे मोहन राकेश कृत 'आधे–अधूरे' का सिंघानिया ही कपूर के रूप में यहाँ विद्यमान है।

समीक्ष्य नाटक में मुख्य कथा के साथ कुछ प्रासंगिक घटनाएँ भी हैं जो स्त्री–पुरुष संबंधों को अन्य कोणों से चित्रित करती है जैसे सीता का प्रेम–विवाह असफल सिध्द होता है, जो अपने पति को तलाक देकर तीन बच्चों के पिता डेनियल से शादी करना चाहती है। परिवर्तित परिवेश में मानव–मूल्यों के सिक्के घिस–घिस कर अपनी चमक खो चुके हैं। कपूर साहब की लडकी विवाह से पहले ही प्रेगनेन्ट हो गयी थी और मुसलमान के साथ भाग गयी थी। बोरकर का लडका भी ईसाई लडकी से प्रेम–विवाह कर रहा है, ऐसा कपूर साहब के कथन से सामाजिक को ज्ञात होता है।

निष्कर्ष :

सारांशतः यह नाटक उन स्त्रियों की विषम परिस्थितियों, कठिनाइयों एवं विसंगतियों को उजागर करता है जो कारखानों और कार्यालयों में काम करती हैं, साथ ही पुरुष अधिकारियों की कूकरी–वष्त्ति पर भी करारा व्यंग्य करता है। 'कुत्ते' यह एक प्रयोगधर्मी सामाजिक नाटक है जिसमे संवेदनात्मक गहराई और अनुभूति की तीव्रता के साथ मध्यवर्गीय परिवारों की शिक्षित युवतियों की समस्याओं और नौकरी के दौरान आनेवाली मुसिबतों का उद्घाटन है।

संदर्भ संकेत :–

1. डॉ.रायलक्ष्मी : आधुनिक हिंदी नाटक चरित्र सृष्टि के आयाम
2. डॉ. 'चंद्र' सुरेश शुक्ल : 'कुत्ते' रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं.1979, पृ. 17
3. वहीं – पृ 26
4. वहीं – पृ 26
5. वहीं – पृ 51

Scanned with OKEN Scanner